पाश्चात्त्य समीक्षा के परिप्रेक्ष्य में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'

ललित कुमार मिश्र
शोध छात्र
गंगानाथ झा विद्यापीठ
रा0सं0सं0, इलाहाबाद
मो0 : 9454086190

संस्कृत विश्ववाणी है। यह विश्व की प्राचीनतम भाशा है। वैसे तो अपनी व्यापकता के कारण संस्कृत–वाङ्मय भारत से बाहर के दशों में प्रचलित अवश्य था, किन्तु पाश्चात्त्य देशों में तो संस्कृत–वाङ्मय का प्रचार–प्रसार अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हो सका। यद्यपि इस शती में हमने परतन्त्रता का दंश झेला था तथापि यह शती हमारे लिए केवल पीड़ाकारिणी ही नहीं रही। इसने हमें संजीवनी भी दी। यह काल इसी कारण से संस्कृत का 'पुनर्जागरण काल' भी कहा जाता है। पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार संस्कृत भाषा व वाङ्मय का वैश्विक प्रसार विश्व संस्कृति के इतिहास में भी एक अभूतपूर्व घटना थी। जैसा कि प्रो0 ए0ए0 मैक्डॉनल का कथन है– "Since the Renaissance there has been no event of such world-wide significance in the history of culture as the discovery of Sanskrit Literature in the latter part of the eighteenth century.**[1]

वैसे तो संस्कृत–साहित्य का भण्डार अनेकानेक उत्कृष्ट कोटि के काव्यों व नाटकों से परिपूर्ण है, तथापि इनमें से भी कतिपय ग्रन्थ ऐसे हैं जिन्होंने अपने अलौकिक प्रभाव से विश्वभर के लोगों को हतप्रभ कर दिया। ऐसे ही अद्वितीय ग्रन्थों में से एक है– 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'। यह ऐसी महनीय कृति है जिसने केवल कृतिकार को ही अमर नहीं बनाया, अपितु रचनास्थल को भी वैश्विक ख्याति दे दी। पाश्चात्त्य समीक्षक मैक्डॉनल महोदय इसे सर्वोत्तम संस्कृत नाटक कहते हैं तो अन्य अनेक पश्चात्त्य समीक्षक इसे विश्व की सर्वोत्तम कृति मानते हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' ही वह प्रथम नाट्य–कृति है जिसके आङ्ग्लभाशीय अनुवाद ने पाश्चात्त्य जगत् को पौरस्त्य–विद्या एवं संस्कृत–वाङ्मय की ओर उन्मुख किया।

कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सर विलियम जोन्स ने 1784 ई0 में बंगाल में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना के अनन्तर विपरीत परिस्थितियों में संस्कृत भाशा का अध्ययन करके 1789ई0 में इस महनीय कृति का आंग्ल–भाषा में अनुवाद किया और फिर जॉन फॉस्टर ने इसे जर्मन –भाषा में अनूदित किया। शाकुन्तल के इस जर्मन भाषानुवाद को जब तत्कालीन जर्मन कवि गेटे महोदय ने पढ़ा तो वे इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने शाकुन्तल को अनेकानेक आह्लादोत्पादक हेतुओं का एकीभूत अभूतपूर्व सङ्ग्रह कह दिया–

Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline, And all by which the soul is charmed, enraptured, feasted, fed?

Wouldst thou the earth and heaven itself in one sole name combine? I name thee, O Sakuntala, and all at once is said."[2]

ध्यातव्य है कि गेटे महोदय ने यह टिप्पणी शाकुन्तल के द्विगुणित अनुवाद मात्र को पढ़कर की थी, मूल ग्रन्थ को पढ़कर नहीं।

अधिकांश पाश्चात्त्य विद्वान् महाकवि कालिदास को शाकुन्तल के कवि के रूप में ही स्मरण करते हैं, जो इस कृति की उत्कृष्टता का प्रमाण है। एक प्रख्यात पाश्चात्त्य विद्वान् हम्बोल्ट महाकवि कालिदास को शाकुन्तल के प्रसिद्ध लेखक के रूप में उद्धृत करते हुए कहते हैं–

"Kalidasa, the celebrated author of the Sakuntala, is a masterly describer of the influence which Nature exercise upon the mind of lovers."[3]

हम्बोल्ट महोदय इस रूप में महाकवि को विश्व के कवियों में सर्वोच्च स्थान देते हैं।

एक अन्य जर्मन विद्वान् वॉल्टर रूबेन महोदय अपनी पुस्तक "Kalidasa: The Human meaning of his works" में कालिदास को भारतीय साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में वर्णित करते हैं। वे महाकवि की समस्त कृतियों के प्रशंसक हैं, तथापि एक राजा और वनवासिनी बाला शकुन्तला के प्रेम पर आधारित कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' से वे सर्वाधिक प्रभावित है। वे विस्मित हैं कि एक प्रेमकथा में समाज के प्रत्येक वर्ग का भी मनोवैज्ञानिक चित्रण है। एक निम्नवर्गीय मछुआरा जो क्षणभर पूर्व चौरकर्म के आरोप में आरक्षियों के प्रताड़न का पात्र था क्षणभर पश्चात् वही राजा के अनुग्रह से राजष्यालक की मैत्री का पात्र हो जाता है। रूबेन महोदय इस उत्कृष्ट कृति में वर्णित लौकिक तत्त्वों, प्रकृति–मानव के आत्मीय सम्बन्धों, पुत्री की विदाई के अवसर पर वनवासी पिता के हार्दिक उद्गारों पर सम्मोहित हैं–

"The act is even for Europeans infinitely moving with its heart sending Farwell. For in Europe too the bride leaves her home with tears, a custom which is dying out, however."[4]

वस्तुतः शाकुन्तल निर्विवादित रूप से कालिदास के कवित्व का सर्वोत्तम निदर्शन है। अधिकांश पाश्चात्त्य विद्वानों यथा श्लेगल महोदय, सर विलियम जोन्स, सर मोनियर विलियम्स इत्यादि ने कालिदास को 'भारत का शेक्सपियर' कहा है और इसका कारण 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' ही है। सर मोनियर विलियम्स शाकुन्तल को कालिदास की सर्वोत्तम कृति स्वीकार करते हैं–

"No composition of Kalidasa displays more the richness of his poetical genius, the

exuberance of his imagination, the warmth and play of his fancy, his profound knowledge of human heart..... in short more entitles his to rank as the Shakespeare of India."[5]

प्रख्यात पाश्चात्त्य समालोचक कीथ महोदय भी शाकुन्तल को असन्दिग्ध रूप से कालिदास की नाट्यकला का सर्वोत्कृष्ट रूप मानते हैं।[6]

प्रायः सभी पश्चात्त्य विद्वानों से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की मुक्तकण्ठ से प्रषंसा की है। शाकुन्तल को जिस किसी ने भी जिस भी रूप में (मूल अथवा अनूदित) पढ़ा, जाना अथवा समझा वह उसके आकर्षण से बँधता चला गया। यद्यपि कीथ महोदय महाकवि कालिदास को संकुचित विचारधारा वाला एवं केवल उच्चवर्ग तक सीमित रहने वाला कवि कहकर उनकी आलोचना करते हैं, तथापि 'शाकुन्तल' जैसी सार्वभौम और अद्वितीय कृति की रचना करने के कारण वे भी उनके समक्ष नतमस्तक हैं।

"We may be grateful that, confined as he was, he accomplished a work of such enduring merit and universal appeal as Sakuntala, which even in the ineffective guise of translation has won general recognition as a masterpiece."[7]

महाभारत के नीरस 'शाकुन्तलोपाख्यान' पर आधारित इस आह्लादमयी कृति में वर्णित स्वर्गीय व दैवीय तत्त्वों, भारतीय मिथकों शाप, वरदान, शकुन, अपशकुन इत्यादि की अवधारणाएँ निश्चित रूप से पाश्चात्त्य विद्वानों के लिए अविश्सनीय हैं, क्योंकि ये सब उनके परिवश एवं संस्कृति से भिन्न हैं, तथापि इस कृति में गुम्फित भावाभिव्यक्ति की कोमलता, कलात्मक सौन्दर्य, समाजवादी विचारधारा, पशु–पक्षियों, वृक्षों–वनस्पतियों के साथ मानव का हार्दिक तथा आत्मीय सम्बन्ध– इत्यादि तत्त्व पाश्चात्त्यों को अपने सम्मोहन से मुक्त नहीं होने देते।

मछली के पेट से मिली एक मुद्रिका (अंगूठी) प्रेमी–युगल के विस्मृत प्रेम का स्मारक बन जाती है। यही बात इसे विश्व की अन्य प्रेम–कथाओं से पृथक् और अद्वितीय बनाती है। प्रकृति और मानव के सम्बन्धों का जैसा चित्रण इस कृति में मिलता है वैसा विश्व–साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। यही कारण है कि प्रायः सभी पाश्चात्त्य विद्वान् 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को अतुलनीय मानते हैं।

वस्तुतः शाकुन्तल केवल कालिदास का ही सर्वस्व नहीं है अपितु समस्त भारतीय वाङ्मय व भारतीय संस्कृति का भी सर्वस्व है।

पाश्चात्त्य विद्वानों की समीक्षाओं और टिप्पणियों ने इस कृति को वैश्विक ख्याति ही नहीं दी अपितु पर्यावरण प्रदूषण, सामाजिक व सांस्कृतिक प्रदूषण के इस वर्तमान युग में इस कृति की उपादेयता और उत्कृष्टता को और भी अधिक बढ़ा दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. A History of Sanskrit Literature by MacDonnell, Chapter - 1, Introductory, p-1
2- xksV d teZuHkk"kh; fVIi.kh dk b0ch0 bLVfod }kjk fd;k x;k vkxyHkk"kkuqokn
3. M.R. Kale dh ^vfHkKku'kkdqUrye~*] P-14
4. Kalidasa: The human meaning of his works by Walter Ruben year 1957, pp -56-57
5. e0vkj0 dkys dh vfHkKku'kkdqUrye] i0 14
6- ,0ch0 dhFk&d`r Sanskrit Drama dk mn;Hkkuq flag&d`r fgUnh vuqokn ^lLÑr ukVd*] i0 152] idk"ku o"kZ 1965
7. Sanskrit Drama by A.B. Kieth, Chapter-VIth Kalidasa, p. 160, Oxford University Press-1965

ललित कुमार मिश्र

शोध छात्र

गंगानाथ झा विद्यापीठ

रा0सं0सं0, इलाहाबाद

मो0 : 9454086190